Research Journal of Language, Literature and Humanities E-ISSN 2348-6252
Vol. **6(2),** 16-21, May **(2019)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

कृष्णा सोबती के लेखन में नारी पात्रों में मुक्ति संघर्ष एवम् बोल्डनेस की भावना

अनीता देवी
हिन्दी विभाग, महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
anitadevi15091979@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 26th July 2018, revised 17th March 2019, accepted 15th April 2019

शोध सार

किसी भी समाज को सुचारू ढंग से चलाने के लिए स्त्री-पुरूष के बीच में सामंजस्य की भावना अति आवश्यक है। क्योंकि किसी एक शोषण से समाज में द्वन्द् की स्थिति पैदा हो जाती है। साहित्य समाज का आयना है जो हमें पूर्ववर्ती घटनाओं को दिखाता है। हमारे समाज में प्रचलित मान्यताएं, परंपराएं, जीवनशैली, समस्याएं, विद्रोह, विरोध, सामाजिक संगठन का पूर्ण ढांचा साहित्य द्वारा प्रतिबिंबित होता है। हिन्दी साहित्य में प्रारम्भ से ही सामाजिक विकास के रंग-ढंग साहित्य में प्रकट होने लगे थे। कहानीकारों ने भी समाज और परिवार में घटित प्रारम्भ में छोटी मोटी घटनाओं को अपने साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया। लेकिन समय के साथ-साथ भारतीय समाज में महिलाओं की जीवनशैली, परंपराओं, मान्यताओं व दैनिक जीवन में तनाव, घुटन, द्वंद स्वतंत्रता की चाह, पुरूषवादी विचारधारा एवं पारंपरिक मूल्यों के प्रति विद्रोह, स्त्री अस्मिता की तलाश व उसकी सार्थकता, आत्मसजकता, बौद्धिकता, दैनिक जीवन में मानसिक, आर्थिक, शारीरिक संघर्ष जघन्य क्रूरताओं के प्रति विरोध, उनकी इच्छाएं, आकांक्षाए साहित्यिक रचनाओं में निकलकर सामने आने लगा है। कृष्णा सोबती का नाम साहित्य के क्षेत्र में आधुनिक लेखिकाओं में बेबाक, यथार्थ लेखन के लिए प्रसिद्ध है। साहित्य में नारी की अस्मिता को प्रमुखता से उठाने में उनकी मुख्य भूमिका रही है। 'स्त्री विमर्श' का मुद्दा वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण के लिए एक प्रमुख विषय है। कृष्णा सोबती की रचनाओं में आत्मीयता भाव प्रवीणता के साथ-साथ कभी न मरने वाले सत्य की तलाश, निरंतर तलाश शोधार्थी से गहरी समझ की तीव्र मांग करते हैं। कृष्णा सोबती के साहित्य में पाठक को हर बार नवीन विचारधारा के साथ नए अर्थ, संदर्भ और चरित्रों के भीतर नए द्वंद की अनुभूति होती है। कृष्णा सोबती की रचनाओं में प्रत्येक शब्द हर बार नयी सोच, छटपटाहट की तहें, नयी सुबह का अहसास, हरेक एक नए अर्थ को एक अलग दिशा प्रदान करते हैं। पाठक अपने दृष्टिकोण इन तहों को सुलझाने में उलझकर उनको सही करने का प्रयास करता है। कृष्णा सोबती का कहानी संसार काफी प्रासंगिक और सार्थक है, इसमें वर्णित स्त्री चरित्र वर्तमान नारी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

शब्द कुंजियां: स्त्री विमर्श, प्रेरणा स्रोत, संघर्ष, द्वन्द्, रचना संसार, विकास।

प्रस्तावना

समाज में नारी का मुक्ति संघर्ष और नारी विमर्श दो अलग-अलग बिन्दु है। नारी विमर्श एक विचारधारा है जिसके आधार पर नारी की मुक्ति हेतु प्रयास किया जाता है। इनकी प्रवृतियों को समय के अनुसार मुद्दों के रूप में समाज में उठाया जाता है। इस प्रकार की विचारधाराओं को नारीवाद के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार की विचारधारा में स्त्री वर्ग पुरूष को स्त्रीयों का सबसे बड़ा दुश्मन समझती थी। इसमें यह माना गया कि स्त्रियों की जो भी दयनीय स्थिति के लिए पुरूष पूर्ण रूप से जिम्मेवार है। अमेरिका और ब्रिटेन में 70 व 80 के दशक में इस प्रकार की संकीर्ण मानसिक विचारधारा का काफी जोर था, लेकिन अब समय के बदलाव के साथ इस प्रकार की भावना कही दिखाई नही देती है। आज समाज में सिर्फ यह देखा जाता है कि स्त्री का समाज में अपना अलग स्थान है और पुरूष का अलग। भारतीय समाज में स्त्री की सामाजिक स्थिति की तुलना उसकी

जाति और धर्म से होती है। अतः स्त्री के मुक्ति आन्दोलन को सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक, जाति और धर्म के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है। क्योंकि भारतीय समाज में हर स्त्री की स्थिति उसकी जाति और प्रस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न है। क्यांेकि एक अमीर घर की औरत की स्थिति एक मजदूर की औरत से अधिक अच्छी होगी। पश्चिमी देशों में नारीवाद की भावना हमारे देश की नारीवाद से भिन्न थी। क्योंकि वहां पर वर्ग पर अधिक जोर दिया जाता था न कि जेन्डर पर। क्योंकि यहां पर शास्त्रों में तो नारी को देवी स्वरूपा बताया गया है, लेकिन वास्तविक स्थिति में वह अनेक समस्याओं से जूझ रही है। प्राचीन काल में भारतीय में सिन्धु घाटी की सभ्यता में भारतीय समाज मातृसत्ता प्रधान समाज था, लेकिन सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के बाद ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों को पुरूषों के आधीन बना दिया गया था किन्तु अधीनता भी नाम मात्र की थी। क्योंकि उस समय की विदुषी महिलाएं भी वर्तमान समय की स्त्रियों की तरह पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलती थीं। उत्तर आधुनिक काल में स्त्रियों की दशा दयनीय हो गई। उस समय से लेकर आधुनिक काल तक नारी की दशा और दिशा दयनीय बनी हुई है। हालांकि वर्तमान समय में नारी की शिक्षा में काफी सुधार हुए है, लेकिन अब भी आबादी में नारी का काफी हिस्सा शिक्षा से वंचित है। क्योंकि कोई भी समाज बिना शिक्षा के तरक्की नहीं कर सकता है। भारत में समाज सुधारकों ने नारी शिक्षा और उनकी स्थिति को सुधारने के लिए काफी कार्य किया है। इनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, राजाराम मोहन राय और ऐनीबेसेन्ट आदि शामिल है। इसके साथ-साथ नारी को अपने अधिकारों और उनको अन्याय को न सहने के लिए भारत के अतिरिक्त पूरे विश्व में जागृति अभियान चला जिसको कुसुम खेमानी ने इस प्रकार कहा है-"सन् 1850 से पूरे विश्व में अपने हकों के लिए महिलाएं सड़कों पर उतर आयी थीं, यह काल महिला जागृति का काल कहा जाता है।"[1] समाज में स्त्रियों ने अपनी बहादुरी का लोहा मनवाया है जिसमें रानी लक्ष्मी बाई का नाम प्रमुख है जिन्होंने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में मुख्य भूमिका निभाई थी। लेकिन आधुनिक साहित्य में उसे अबला और देवी के रूप में सम्बोधित किया गया, न कि पुरूष के समान संघर्षमय रूप में। सृष्टि की संरचना की कल्पना नारी के बिना असम्भव है इसी कारण नारी को जीवन का मुख्य आधार माना जाता है। सदियों से नारी पुरूष के लिए एक उपभोग की वस्तु रही है और वह हमेशा उसका मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न करता रहा है। इसके साथ उसको यौन शुचिता, पवित्रता और नैतिकता का पाठ पढ़ाता रहा है। समय के परिर्वतन और पारम्परिक यौन अवधारणाओं में बदलाव के कारण नारी अपने अधिकारों के बारे में जागरूक हुई है। उन्नीसवीं सदी के सातवें दशक के प्रारम्भ में गर्भ निरोधकों व गर्भपात के अधिकार ने स्त्री को दैहिक बिषय पर सोचने के लिए विवश किया है। 20वीं शताब्दी के अंत में महिला रचनाकारों ने स्त्री के दैहिक उत्पीड़न और उनकी आकांक्षाओं के बारे में लिखना शुरू किया है। इस सम्बन्ध में स्त्री विमर्श और स्त्री मुक्ति दो अलग-अलग विषय में शामिल किया गया है। स्त्री विमर्श को एक विचारधारा के रूप में माना जाता है जिसके द्वारा स्त्री के मुक्ति के लिए प्रयास किये जाते हैं। इन्हीं प्रवृतियों को मुद्दा बनाकर नारीवाद का नाम दिया जाता है। भारतीय स्त्री का विश्लेषण उसकी जाति और धर्म के अनुसार किया जाता है। यह विश्लेषण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए तभी नारी मुक्ति का आन्दोंलन सफल हो सकता है। पश्चिमी देशों का नारीवाद हमारे देश से भिन्न है। क्योंकि वहाँ पर वर्ग पर अधिक जोर दिया जाता है। हमारे देश में 'जेन्डर' के उपर अधिक ध्यान दिया जाता है। वर्तमान समय में स्त्रियों से सम्बन्धित समस्याएं जैसे दहेज हत्या, बलात्कार, यौन शोषण,कन्या भ्रूण हत्या आदि हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित कर रही हैं। नासिरा शर्मा ने स्त्री की वर्तमान स्थिति पर खुलकर लिखा है। 'औरत के लिए औरत' में उन्होंने नारीवाद के संबंध में लिखा है।" यह सिर्फ प्रतिक्रियावाद से सम्भव नहीं है कि सीदयों पहलें से चली आ रही नारी अब बदला लो। उसे पूरी जिन्दगी को बड़ी संजीदगी से देखना होगा, क्योंकि अभी औरत के पास विद्रोह की दृष्टि के विकास की थीसिस और जीवन का लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं है। मैं नारी के पक्ष में खड़ी हूँ क्योंकि मैं खुद नारी हूँ लेकिन नारीवादी होने का अर्थ प्रोग्रेसिव होना नहीं है। जहाँ तक नारीवादी होने की बात है, उसकी पहली शर्त है कि वह अपने द्वारा पैदा किये गये बच्चों को अपने खिलाफ खड़ा करे, बल्कि उसे औरत के प्रति दृष्टिकोण को समझाए, तभी मानव की महता को पाया जा सकता है। इसलिए मानवतावादी होना नारीवादी होने से ज्यादा बेहतर समझती हूँ।"[2] महिला सशक्तिकरण के सम्बन्ध में स्त्री विमर्श का उदेश्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब स्त्री

अपने आप को पुरूष के समान समझे व अपनी स्वतन्त्रता और स्वाबलम्वन की छवि को बनाये। अन्यथा वह हमेशा पुरूषवादी विचारधारा का शिकार होती रहेगी। उसे अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व साबित करना है। सविता सिहं ने अपनी कविता में नारी के अस्तित्व के बारे में लिखा है-"मुझे वह स्त्री पसंद है जो कहती है अपनी बात साफ-साफ, बेझिझक जितना कहना है बस उतना, निर्भीक जो करती है अपने काम, नहीं डरती सोचती हुई आत्म निर्भरता पर अपने, हटाती नहीं वे आखिरी पर्दे, आत्म जिन्हें बचाये रखना चाहती है देह के लिए।"[3] 'ऐ लड़की' उपन्यास में कृष्णा सोबती ने अम्मू की भूमिका माँ के रूप में एक बेटी को समझाते हुए चित्रित किया है जो हमेशा उसके सुन्दर भविष्य के बारे में सोचती रहती है। लेकिन इस सब के बावजूद वह अपने विचारों को अपनी पुत्री पर थोपती नही है। वह अपनी बेटी को कहती है-"एक बात याद रहे कि अपने से आजादी चाहिए होती है। देती हो कभी अपने को? तुम्हारी मनमानी की बात नहीं कर रही। कुछ मनचाहा भी कर सकी हो कि नहीं?"[4] अम्मू अपनी बेटी को आजादी का पाठ पढ़ाती है और जीवन की कठिन चुनौतियों को दृढ़ता से लड़ने के लिए प्रेरित करती है। इस सब में उसमें एक आधुनिक नारी के दर्शन होती है। वह कहती हैं-"अब अपने में किसी पराए को उगाने की जरूरत नहीं। किसी के धकेलने से कोई धावक नहीं होता। खुद अपनी दौड़ दौड़ने से धावक कहलाता है।"[5] कृष्णा सोबती ने अम्मू के माध्यम से यह समझाने की कोशिश की है कि अम्मू अपनी बेटी को नैतिकता अनैतिकता, शुचिता अशुचिता, लज्जा और शीलता का पाठ नही पढ़ाती है बल्कि उसे स्वतन्त्रता और निर्भीकता का पाठ सिखाती है। वह उसे कहती है-" हमारे भाई को भेजा गया कॉलेज और हम बहनों की पढ़ाई पंडित, ग्रंथी और मौलवी के पास। जरा सोचो,मैं अपने भाई की तरह पढ़ती तो क्या बनती? क्या होती मैं और क्या होते मेरे बच्चे! सच तो यह है कि लड़कियों को तैयार ही जानमारी के लिए किया जाता है-भाई पढ़ रहा है, जाओ दूध दे आओ। भाई सो रहा है, जाओ कंबल ओढ़ा दो। जल्दी से भाई को थाली परोस दो। उसे भूख लगी है। भाई खा चुका है लो, अब तुम भी खा लो।"[6] 'दिलो दानिश' उपन्यास में कृष्णा सोबती जी नें नारी की अस्मिता को उजागर किया है। इसमें मध्यकालीन सामंती मानसिकता, पुरूष स्त्री, स्त्री की स्थिति और नाजायज संतान के सम्बन्ध में चर्चा की है। कृष्णा सोबती ने 'दिलों दानिश' में महक बानों का चित्रण एक साहसी औरत के रूप में में किया है वह अपनी दृढ़ शक्ति से वकील साहब को उसकी जिम्मेदारी का एहसास दिलाती है। वह परिस्थिति से हार नही मानती है और वकील साहब से कहती है "बेटा हमेशा से आपका है। अब बेटी को भी गोद लिया जा रहा है। अहा-हा, हमसे पैदा हुए। वकील साहिब। इन विचारे लावारिसों को खानदानी जामा पहनाना तो जरूरी है। आप ही बताएँ-इन दोनो के बिना हमारे पास आपका क्या धरा पड़ा है? है कुछ? आप हमारे वकील हैं। आप ही सोचकर बताइए।"[7] इस प्रकार महक वकील साहब को उसकी जिम्मेदारी का एहसास दिलाती है। समय के साथ में काफी बदलाव आ गया है। वह अब वकील साहब से अपना हक माँगती है "हमारे जेवर तो हम तक पहुँचाइए। अब हम और इंतजार न करेंगे।.....हमारी माँ के जेवर हमें आज शाम तक मिल जाने चाहिए वकील साहिब। आप अम्मी के वकील रहे, अब हम आपकी मुवक्किल की बेटी हैं जिसका उन पर पूरा हक है।"[8] इससे यह साबित होता है कि प्रेमिका अगर प्रेम में प्रेमी का गुस्सा सहन करती है तो वक्त आने पर अपने हक को भी माँगती है। लेकिन जब महक को यह बात पता चलती है कि उसके बच्चे भी पिता का साथ चाहते है तो वह शान्त रहती है "महक बानो के चेहरे पर खाक सी बरसने लगी। अपने को सरका, पहले बदरू की माँ को परे किया। फिर किसी के अब्बू को, महक बानो को, और ठंडी कलपती आवाज में कहा बदरूदीन, तुम अभी नहीं समझोगे। हक माँगना अगर लड़ाई है तो दूसरों का हक मारना भी बेईसाफी है।"[9] महक बानो अपने अधिकारों के प्रति जागरूक और सशक्त है। वह समाज की परवाह नही करती है। वकील साहब के मासूमा की शादी में शामिल न होने के कारण को भी वह सहज ढ़ग से लेता है और माँ के फर्ज से मुँह नहीं मोड़ती है, बल्कि बड़ी खुशी से खाँ साहिब के साथ शामिल होती है।" हम तुम्हारे फर्ज से अदा हुए बेटी। तुम्हें अपने यहाँ के जेवर पसंद आएँगे तुम्हारे अपने हैं। तुम्हारी नानी के। हाँ, कुछ हमने अपने लिए, कुछ बदरू की दुल्हन के लिए है। मासूमा, अपने ससुराल में कायदे से निभाना। तुम्हारे अब्बू खुश होंगे। और हम भी।"[10] महक खुश भी छिपाना नही चाहती क्योंकि उसे पता है कि जब समाज या मासूमा के ससुरालवालों को यह पता लगेगा कि मासूमा नाजायज औलाद है तो उसकी जिन्दगी में तुफान सा आ जाएगा, जिससे उसकी जिन्दगी बर्वाद हो जाएगी। इस लिए वह इन सब बातों पहले ही स्पष्ट कर लेती है। राकेश कुमार के अनुसार-" महक अपने व्यक्तित्व को विभाजित होने

से बचाये हुए है। यह अस्तित्व के प्रति सचेतना है। वह वकील साहब के साथ भी है और वकील साहब के बिना भी.....पुर्ण। यही उसका नायिकातत्व है जो कुटुंब, बउआजी से लेकर छुन्ना बीबी के समंजन के विरूद्ध चैलेंजिंग है।"[11] महक अपनी जिन्दगी में तमाम उतार चढ़ावों के बावजूद अपने कर्व्यों को ईमानदारी सें निभाती है। महक वकील साहब द्वारा छोड़ देने के बाद भी हार नही मानती है, वह जिन्दगी को दोबारा शुरू करती है। वह अनवर के साथ रहकर समाज में एक मिसाल कायम करती है। वह अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अनवर खाँन के साथ रहती है। वह महसूस करती है "आज से पहले तो हम औरत भी नहीं थे। ओढ़नी थे, अँगिया थे, सलवार थे।...जूति अपनी थी और पाँव किसी को सौंप रखे थे।"[11] अन्त में वकील साहब की दयनीय स्थिति को देखकर महक की आँखे आंसू से भर आती है इसीलिए वह उसे अन्धेरे में न रखते हुए खाँन साहब को साथ लाती है। कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास 'मित्रो मरजानी' में मित्रो के रूप में एक ऐसी स्त्री का चित्रण किया है जो बेबाकी से अपनी बात कहती है। वो आधुनिक नारी की तरह अपने शरीर अपना अधिकार समझती है। उसका पति सरदारी लाल उसे संतुष्ट नहीं कर पाता इसके सम्बन्ध में लेखिका ने इस प्रकार लिखा है-''मित्रों यौवन की ऐसी उफनती नदी है जिसे उसका पति सरदारी लाल बांध तो पाता नहीं, उसके तीव्र प्रवाह में खुद ऐसे बह जाता है कि उस धारा में उसके पैर कहीं टिक नहीं पाते।'' मित्रो पति को बगलोल कहकर जिठानी से कहती है-''देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता। ..... बहुत हुआ हफ्ते पखवारे ..... और मेरी देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास कि मछली सी तड़पती हूँ।'' मित्रो की देह धर्म की स्वीकृति उसके रचनात्मक सरोकारों को समझने के लिए कदाचित सबसे अच्छा उदाहरण है। ''मित्रो के रूप में हिन्दी उपन्यासों में पहली बार एक ऐसी नारी पात्र की सृष्टि हुई जिसमें देह धर्म के उफनते ज्वार के सहज स्वीकार की सम्पूर्ण साहसिकता है।''

अपने इस शारीरिक भूख को मिटाने के लिए वह ससुराल में अपने जेठ बनवारी और नयामत थानेदार से सम्बन्ध बनाती है। मायके में भी उसके कई पुरुषों से सम्बन्ध रह चुके हैं। मित्रो पर अपनी माँ का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा है कि वह एक सभ्य परिवार की बहू बनकर भी लक्ष्मण रेखा में रहना नहीं सीख सकी। लेकिन अन्त में वह वफादारी के साथ अपने पति के पास लौट आती है। और उसका साथ देती है।

स्वातंत्रयोतर हिन्दी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से एक नये भाषा और काव्य की संरचना की। कृष्णा सोबती नई कहानी आंदोलन में अकेली कहानीकार हैं जिन्होंने कम कहानियां लिखीं जबकि उस दौर में उनके अनेक समकालीन लेखक बहुत सक्रिय थे, उनका कोई प्रतिनिधि संग्रहय प्रकाशित नहीं हुआ। 'बादलो के घेरे' एक मात्र संग्रह सन् 1980 में प्रकाशित हुआ इसमें उनकी लम्बी कथा यात्रा को समेटती हुई चैबीस कहानियां हैं। ''इन कहानियों में वह समय बोलता है जो गुजर चुकने पर भी गुजर रहें से असंबद्ध नहीं हैं। ये जीवन के अनेक रंगों और चेहरों की कहानियां हैं, जिनका सच बाहर से आरोपित न होकर अंदर की गहराईयों से बरवस फूटा हुआ है। जिसने कथा को अपने आप रूपायित होने दिया है। इसमें ताजगी है, तरलता है और एक अनोखा सम्मोहन है।''

आज भौतिक युग में अनेक सुख-सुविधाओं के बावजूद भी हरेक व्यक्ति अनेक समस्याओं से ग्रसित है, जिसमें उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं घरेलू समस्यायें मौजूद हैं। कृष्णा सोबती ने अपने कथा साहित्य में पांच-छः दशक पहले इन समस्याओं और अन्तरद्वन् को पात्रों के जरिये उल्लेख किया है। कथा साहित्य में नारी पात्र द्वारा किया है। सोबती का साहित्य सभी प्रकार की रूढ़ियों से अलग-थलग जीवन को सहज रखने एवम् जीने की प्रेरणा देता है।

महिलाओं की स्थिति किसी भी समाज के विकास का महत्वपूर्ण मापदण्ड है। विश्व की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। जैसे कि हम जानते हैं महिला समाज की धुरी है। लेकिन पूरा नारी समाज असमानता और पिछड़ेपन का शिकार हैं। महिलाओं के साथ विभिन्न स्तरों पर होने वाले भेदभाव, शोषण और अन्याय ने महिलाओं की समाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया है। अगर सम्पूर्ण विश्व विकसित और विकासशील और पिछड़े देशों में विभाजित है तो पूरा नारी समाज इससे भी अधिक हिस्सों में बंटा हुआ है। यहां उसकी स्थिति अत्यधिक विषमता से परिलक्षित होती है। संयुक्त राष्ट्र संघ सहित अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और संस्थाओं की ओर से महिलाओं की स्थिति पर किये गये शोध परक अध्ययनों से जो तस्वीर उभर कर सामने आयी है उनमें नारी की व्यथा-कथा प्रमुखता से उजागर होती है। नारी के उपर बाजारवादी

अर्थव्यवस्था के साथ उपभोक्तावाद, पश्चिमीकरण का प्रभाव भी अत्यधिक हैं। जिसके कारण वैश्वीकृत संस्कृति का उदय हुआ है। वर्तमान समय में स्त्री समानता व सामाजिक न्याय के लिए नये तरीकों और विचारों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

कृष्णा सोबती ने अपने साहित्यिक संसार में कई प्रकार की रचनाओं के साथ अपनी लेखन क्षमता का परिचय दिया है। वर्तमान समय में स्त्रियां जिन समस्याओं से जूझ रहीं हैं उनका अनुमान उन्होंने 40-50 वर्ष पहले ही महसूस कर लिया था और पुरूषों द्वारा बनाए गए नारी संहिता से उनको बाहर निकलने का भरसक प्रयत्न किया है। कृष्णा सोबती जी ने अपनी रचनाओं के पात्रों के माध्यम से जैसे- मित्रो, रती, महकबानो, अम्मू के चित्रण द्वारा कई परवर्ती लेखिकाओं की प्रेरणा बन गईं। कृष्णा सोबती उन विशिष्ट महिला कथाकारों में हैं जिन्होंने अपेक्षाकृत कम कृतियां लिखकर भी अपनी पहचान और लोकप्रियता को सिद्ध किया है। लेखिका की मूल संस्कृति पंजाब की है। कृष्णा सोबती सशक्त, अदम्य, प्रभावी, बेबाक अभिव्यक्ति के व्यक्तित्व की धनी महिला साहित्यकार के रूप में जानी जाती हैं।

भारतीय धार्मिक ग्रंथों नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शास्त्रों में लिखा गया है कि पुरूष स्त्री के बिना कुछ भी नही है। जिस प्रकार शिव और पार्वती एक है। उसी प्रकार नारी और पुरूष में भी सामंजस्य जरूरी है। प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के अलावा हमारे भारतीय संविधान में प्राप्त अधिकारों के बावजूद आधुनिक भारत में नारी की स्थिति आज भी दयनीय है। नारी को इस स्थिति से उबारने के लिए महिलाओं पर होने वाली हिंसा और उत्पीड़न की घटनाएं उनके लिए बहुत बड़ा अभिशाप हैं। संवैधानिक प्रावधानों एवं संरक्षण के फल स्वरूप क्या वास्तव में महिलाएं अपना सामान्य जीवन-यापन कर रहीं हैं? संविधान द्वारा प्रदत्त संरक्षण एवं महिला उत्थान हेतु निर्मित योजनाओं एवं नीतियों के फलस्वरूप उनकी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियों में क्या परिवर्तन हुए हैं और वर्तमान में महिलाएं घर-परिवार व समाज में अपने आपको कितना सुरक्षित महसूस करती हैं। कृष्णा सोबती ने हिन्दी कथा साहित्य के आधुनिक विधाएं- कहानी और उपन्यास द्वारा व्यापक रूप से समाज के आंतरिक एवं बाह्य यथार्थ का चित्रण किया है। लेखिका की साहित्यिक यात्रा 'बादलों के घेरे' से प्रारम्भ हुई। इसी समय नई कहानी के दौर में वे कथाकार के रूप में पहचानी गईं। 'डार से बिछुड़ी' नामक आंचलिक उपन्यास का प्रणयन करके उन्होंने लेखिकाओं द्वारा लिखे गये कथा साहित्य में एक अभाव की पूर्ति की है। 'मित्रों मरजानी', 'यारों के यार', और सूरजमुखी अंधेरे के जरिये साहसी लेखिका के रूप में उनकी चर्चा विशेष रूप से हुई। क्योंकि इससे पूर्व हिन्दी में किसी महिला कथाकार द्वारा स्त्री का ऐसा रूप इतने साफ और मुंहफट रूप में नहीं हुआ था। कृष्णा सोबती ने रत्ती के माध्यम से समाज में नारी के उपर संवेगात्मक अत्याचार को उजागर किया है जो मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न के अन्तद्वंद्वों को झेलती है। लेकिन वह अन्य स्त्रीयों की तरह अपनी जीवन लीला को समाप्त नहीं करती है अपितु साहस से जीवन की मुश्किलों का सामना करती है। मधुरेश जी के अनुसार-सूरजमुखी अँधेरे के की अपने रत्ती बचपन में किए गए अत्याचार को ही अपने परवर्ती विचलन का आधारभूत कारण मानती है। देह के प्रति बढ़ती हुई क्रूरता ने ही दे हके प्रति उदासीन बना दिया है और बाद में जब दिवाकर के रूप में उसे सम्मान और स्वीकृति देनेवाला व्यक्ति मिलता है, तो वह फिर अपने सहज और प्राकृत रूप में लौट आती है।"[12] अन्त में यह कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती की कृतियों में वर्णित नारी पात्र आधुनिक नारी की तरह सशक्त, बोल्ड, बेबाक और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है।

संदर्भ सूची

1. यादव राजेन्द्र (1996)॰ कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. मधुरेश (1997). हिन्दी कहानीः अस्मिता की तलाश, आधार प्रकाशन, पंचकुला
3. सोबती कृष्णा (1958). डार से विछुड़ी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. सोबती कृष्णा (1972). सूरजमुखी अँधेरे के, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. सोबती कृष्णा (1993). दिलो दानिश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

6. सोबती कृष्णा (1967). मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. सोबती कृष्णा (1968). तिन पहाड़, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. सोबती कृष्णा (1991). ऐ लड़की, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. सोबती कृष्णा (1980). बादलों के घेरे, कहानी संकलन) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. सोबती कृष्णा (1968). यारों के यार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. कुमार सरिता (1993). महिला कथाकारों में प्रेम का स्वरूप-विकास, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
12. मधुरेश (1997). हिन्दी कहानीः अस्मिता की तलाश, आधार प्रकाशन, पंचकुला